ग्रन्थमाला 'गुरु' : खण्ड १

गुरु का महत्त्व

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

सितम्बर २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख ५९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २०.९.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसारार्थ 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स की संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्न से दर्शाए हैं ।)

१. गुरु १०

१ अ. व्युत्पत्ति १०

१ आ. व्याख्या एवं अर्थ १०

१ इ. इतिहास ११

१ ई. गुरु का स्वरूप १२

१ उ. गुरुतत्त्व १२

२. गुरु का महत्त्व १३

२ अ. गुरुमहिमा १३

२ आ. शिक्षाशास्त्र के दृष्टिकोण से २८

२ इ. मानसशास्त्र के दृष्टिकोण से २८

२ ई. अध्यात्मशास्त्र के दृष्टिकोण से २८

* गुरु के पास जाना २८

* गुरु के कारण संकटों का निवारण २९

* प्रारब्ध एवं गुरु २९
* शिष्य को माध्यम न बनाकर स्वयंप्रकाशी करना ३०
* गुरु के अस्तित्व से शिष्य की उन्नति होना ३३
* सिद्धियों से बचकर रहना सिखाना ३४
* गुरुकृपा से प्राप्त ज्ञान में उस ज्ञान को समझ पाने की शक्ति भी उसी समय गुरु द्वारा दी जाना ३४
* गुरु के प्रकारानुसार महत्त्व ३६
* गुरुप्राप्ति से पूर्व एवं पश्चात की प्रगति ३६
* गुरु के प्रवचन के समय ऋषि-मुनि एवं देवताओं की उपस्थिति ३८
* देहत्याग के पश्चात भी सिखाना ३८
* गुरु के अध्यात्मस्तरीय महत्त्व को सिद्ध करनेवाले वैज्ञानिक प्रयोग तथा साधकों का सूक्ष्म-ज्ञान सम्बन्धी परीक्षण ३९

ग्रन्थ की विशेषता दर्शानेवाला सूक्ष्म स्तरीय प्रयोग !

प्रस्तुत ग्रन्थ पटल पर (टेबल पर) रखकर हथेली ग्रन्थ के मुखपृष्ठ से २ – ३ सें.मी. दूर रखें । 'क्या हथेली पर स्पन्दन (सूक्ष्म संवेदनाएं) अनुभव होते हैं ? 'मन को क्या अनुभव होता है, अच्छा अथवा कष्टदायक ?', इस ओर ध्यान दें । तदुपरान्त हथेली ग्रन्थ के ऊपर से सीधी रेखा में उठाते जाएं । ऐसा करते समय 'ग्रन्थ से कितने ऊपर तक हथेली में संवेदना होती है ?', यह भी अनुभव करें । कुछ लोग पहले प्रयास में संवेदना नहीं अनुभव कर पाएंगे । तब यह प्रयोग पुनः करें । हथेली में संवेदना होना बंद हो जाए, तब यह प्रयोग रोक दें । इस प्रयोग का उत्तर पृष्ठ '५२' पर दिया है ।

भूमिका

सन्त कबीर ने सद्गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है,

बिना गुरु के गति नहीं, गुरु बिन मिले न ज्ञान ।
निगुरा इस संसार में, जैसे सूकर, श्वान ।।

वर्तमान में अधिकांश लोगों का दैनिक जीवन भागदौड तथा समस्याओं से ग्रसित है । जीवन में मानसिक शान्ति एवं आनन्द प्राप्त करने के लिए कौनसी साधना निश्चित रूप से कैसे करें, इसका जो यथार्थ ज्ञान कराते हैं, वे हैं गुरु ! किन्तु तुकाराम महाराजजी के कथनानुसार आज समाज को गुरु के महत्त्व का विस्मरण होते जा रहा है । प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्णित गुरुमहिमा पढकर जिज्ञासु एवं साधकों में गुरु के प्रति श्रद्धा निर्मित होगी ।

शिष्य के जीवन में गुरु का अनन्य महत्त्व है । गुरु के बिना ईश्वरप्राप्ति करना सम्भव ही नहीं । गुरु का भक्तवत्सल रूप, दयालु दृष्टि, शिष्य पर कृपा करने के माध्यम इत्यादि विभिन्न पहलुओं द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थ से शिष्य को गुरु के अन्तरंग के वास्तविक दर्शन होंगे । इससे गुरु के प्रति शिष्य की भक्ति दृढ होगी एवं उसे गुरु के अस्तित्व का अधिकाधिक लाभ लेना सम्भव होगा ।

शिष्य गुरु का महत्त्व जानता है; क्योंकि उसे गुरु के आध्यात्मिक सामर्थ्य की प्रतीति होती है । किन्तु वर्तमान विज्ञानयुग के साधारण व्यक्ति को प्रत्येक विषय वैज्ञानिक मापदण्डों पर सिद्ध करने पर ही सत्य लगता है ! इसीसे उसका अध्यात्म पर विश्वास होता है तथा वह साधना आरम्भ करता है । इसलिए हमने हमारे गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजी के छायाचित्र के सन्दर्भ में 'पिप' नामक वैज्ञानिक प्रणाली का उपयोग कर विविध परीक्षण किए । विज्ञान के आधार से भी गुरु की श्रेष्ठता कैसे सिद्ध होती है, इस सन्दर्भ में नवीनतम विवेचन, प्रस्तुत ग्रन्थ की एक निराली विशेषता है ।

इस ग्रन्थ में दिए मार्गदर्शन से जिज्ञासुओं की साधक तक, साधकों की शिष्य तक तथा शिष्यों की गुरु तक प्रगति हो, यह श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**